

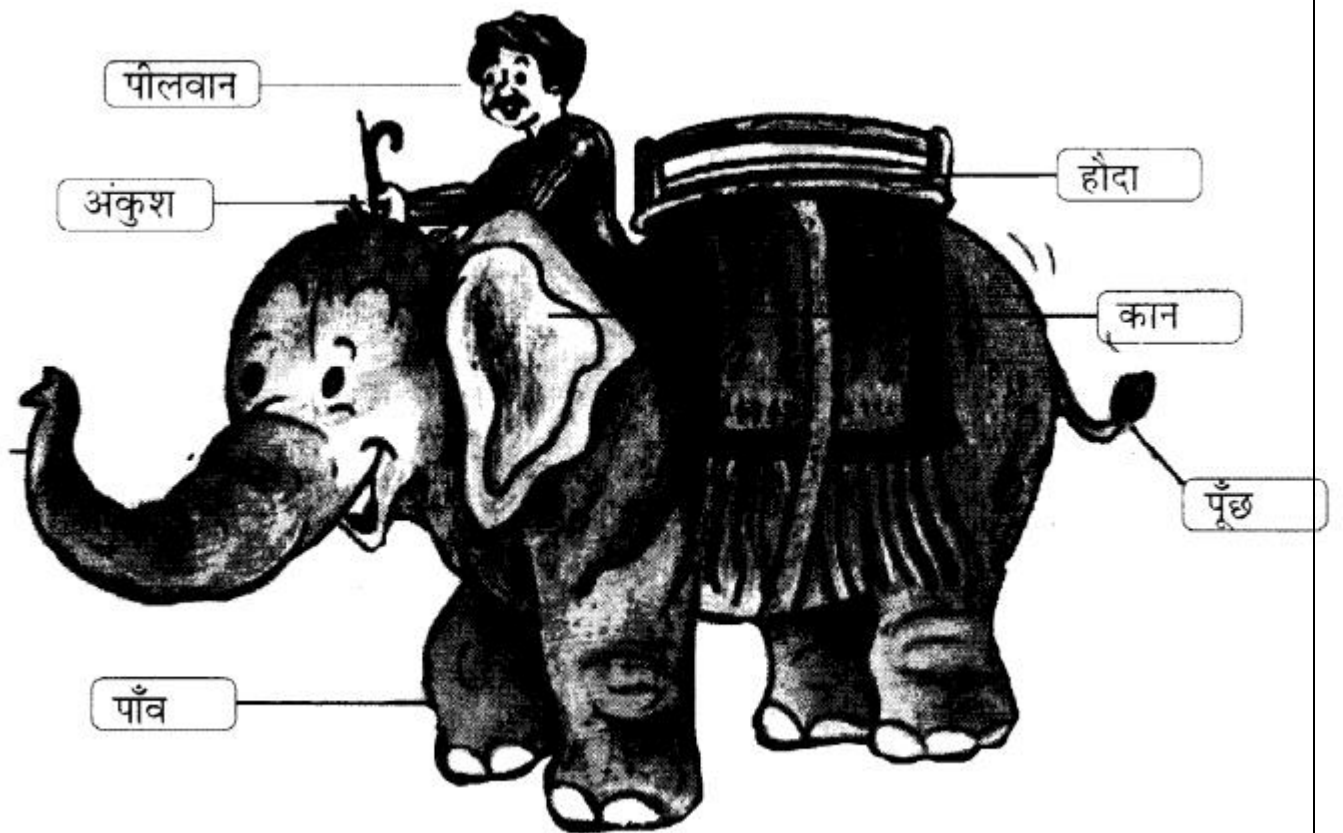
अध्याय 22

हाथी चललम चललम

प्रश्न-अभ्यास

हाथी मेरे साथी

बताओ तो जानें



कौन कैसा?

कविता पढ़कर बताओ।

हाथी 'चल्लम चल्लम'
सँड फट्टर फट्टर
खट्टर खट्टर दाँत

लंबी लंबी सूँड़
देह थुलथुली थल्लम थल्लम
पाँव धपाधप,
बच्चे, डगम डगम

चार अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न: हाथी की सवारी के दौरान बच्चों की भावनाएं कैसी हैं?

उत्तर: हाथी की सवारी के दौरान बच्चे उत्सुक और आनंदित हैं। उनकी भावनाएं खुशी, हर्ष, उत्साह और उमंग से भरी हैं।

प्रश्न: हाथी की सवारी से क्या सिखने को मिलता है?

उत्तर: हाथी की सवारी से हमें यह सिखने को मिलता है कि बच्चों का जीवन खुशी और उत्साह से भरा होता है। वे छोटी-छोटी चीजों में भी खुश हो जाते हैं और उन्हें आनंद का अहसास होता है।

प्रश्न: हाथी की सवारी से किस प्रकार का सांस्कृतिक संदेश मिलता है?

उत्तर: हाथी की सवारी से हमें सांस्कृतिक संदेश मिलता है कि बच्चों को अपनी परंपरा और संस्कृति के साथ खेलना और मनोरंजन करना चाहिए। सवारी में पगड़ी बाँधकर, हाथी की चाल में चलना, और खुद को एक विशेष रूप में सजाकर बच्चों को अपनी संस्कृति के साथ मिलने वाली आनंददायक अनुभव का अवसर होता है।

प्रश्न: हाथी की सवारी की विशेषताएं कैसी हैं जो बच्चों को आकर्षित करती हैं?

उत्तर: हाथी की सवारी की विशेषताएं उनकी बड़ी सैंड, लंबी पूंछ, और मस्त चाल हैं, जो बच्चों को आकर्षित करती हैं। हाथी की पर्वत जैसी देह, भारी पैर, और धम्म-धम्म की आवाज़ भी उनकी विशेषताओं में शामिल हैं।

प्रश्न: बच्चे हाथी की सवारी में कैसे शामिल हो रहे हैं?

उत्तर: बच्चे हाथी की सवारी में हौदे में बैठकर हाथी पर सवार होकर खेतों, गाओं, और रास्तों की सैर कर रहे हैं। उन्होंने हाथी की बड़ी और भारी सवारी का आनंद ले रखा है।

प्रश्न: कविता में हाथी की चाल का कैसा वर्णन है?

उत्तर: कविता में हाथी की चाल का वर्णन मस्त चाल, पर्वत जैसी देह के साथ दिया गया है। हाथी के पाँव खंभे की तरह भारी हैं और उनकी 'धम्म-धम्म' की आवाज़ के साथ वह आगे बढ़ रहा है।

प्रश्न: बच्चे हाथी की सवारी से क्या उम्मीद रख रहे हैं?

उत्तर: बच्चे हाथी की सवारी से यह उम्मीद रख रहे हैं कि वे हाथी पर सवार होकर दिनभर घूमेंगे। वे हाथी की चाल, सैंड, और भारी सवारी का आनंद लेना चाहते हैं।

सात अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न: हाथी की सवारी की कविता में बच्चों का उत्साह और उमंग कैसे व्यक्त हो रहा है?

उत्तर: हाथी की सवारी की कविता में बच्चों का उत्साह और उमंग बड़े सहज शब्दों में व्यक्त हो रहा है। वे हौदे में बैठकर हाथी पर सवार होकर खेतों और गाओं की सैर कर रहे हैं, और उन्हें यह बहुत मज़ा आ रहा है। वे हाथी की मस्त चाल, भारी सवारी, और उसकी विशाल सैंड को देखकर बहुत हर्षित हैं।

प्रश्न: कविता में हाथी की विशेषताएं कैसे चित्रित हैं और इसका बच्चों पर कैसा प्रभाव हो रहा है?

उत्तर: कविता में हाथी की विशेषताएं, जैसे उसकी लंबी सैंड, बड़े पाँव, और मस्त चाल, को सुनिश्चित रूप से चित्रित किया गया है। इसका बच्चों पर प्रभाव यह है कि वे हाथी की सवारी का आनंद ले रहे हैं और इसकी विशालता और भारीभरकमी को देखकर वे हर्षित हो रहे हैं।

प्रश्न: कविता में हाथी की चाल का कैसा वर्णन है और इससे बच्चों को कैसा आभास हो रहा है?

उत्तर: कविता में हाथी की चाल का वर्णन मस्त चाल, पर्वत जैसी देह के साथ है। हाथी के पाँव खंभे की तरह भारी हैं और इसकी 'धम्म-धम्म' की आवाज़ सुनकर बच्चों को यह आभास हो रहा है कि हाथी की चाल कितनी विशाल और भारी है, जो उन्हें और भी उत्सुक बना रहता है।

प्रश्न: बच्चे हाथी की सवारी में कैसा आनंद ले रहे हैं और उनकी भावनाएं कैसे व्यक्त हो रही हैं?

उत्तर: बच्चे हाथी की सवारी में बड़ा आनंद ले रहे हैं और उनकी भावनाएं हर्ष, उत्साह, और प्रशंसा से भरी हुई हैं। वे हाथी की मस्त चाल और उसकी भारी सवारी को देखकर बहुत खुश हैं और इसे उनका आत्मविश्वास और उत्साह बढ़ा रहा है।

प्रश्न: बच्चे क्यों चाहते हैं कि हाथी नाचे और उन्हें क्यों वह चालने की इजाज़त नहीं देते हैं?

उत्तर: बच्चे हाथी को नाचने के लिए कहते हैं, लेकिन फिर वे दरअसल नहीं चाहते कि हाथी गिर जाए और चोटी मारे, इसलिए वे उसे चालने की इजाज़त नहीं देते हैं। इससे हमें यह सिखने को मिलता है कि हमें कभी-कभी अपने उत्साह में हीराफेरी करने की आवश्यकता होती है ताकि कोई चोट न आए।

कविता का सारांश

कविता 'हाथी चल्लम चल्लम' के रचयिता श्रीप्रसाद हैं। इस कविता में कवि ने एक हौदे में बैठकर बच्चों द्वारा की गई हाथी की सवारी का वर्णन किया है। बच्चे एक हौदे में बैठकर हाथी पर सवार होकर खूब मजे कर रहे हैं। हाथी हौले-हौले चल रहा है। हाथी की सैड लंबी है और दाँत भी लंबे-लंबे हैं। अपने सिर को मटकाता, नखरे दिखाता हाथी अपनी मस्त चाल में चला जा रहा है। जब हाथी चलता है। तो उसकी पर्वत जैसी देह थुलथुल कर हिलती है। हाथी के पाँव खंभे की तरह भारी हैं। हाथी अपने पैरों की 'धम्म-धम्म' की आवाज़ के साथ आगे बढ़ रहा है। बच्चे कह रहे हैं कि हाथी के जैसी कोई सवारी नहीं है। हाथी का महावत पगड़ी बाँधकर बैठा है। हम बच्चे हाथी पर हौदे में बैठे हैं। बच्चे कह रहे हैं। कि हम हाथी पर सवार होकर दिनभर घूमेंगे। पहले तो बच्चे हाथी को नाचने के लिए कहते हैं, फिर यह कहकर वे मना कर देते हैं कि कहीं वे गिर न जाएँ।

शब्दार्थ: हौदा-हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला आसन, जिस पर बैठकर लोग सवारी करते हैं। मूँड़-सिर।।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता "हाथी चल्लम चल्लम" से ली गई हैं। इस कविता के रचयिता श्रीप्रसाद हैं। इसमें उन्होंने हाथी की सवारी करते बच्चों के उमंग और उत्साह को व्यक्त किया है।

व्याख्या: उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि बच्चे हाथी के ऊपर हौदे में सवार होकर उसकी सवारी कर रहे हैं। हाथी की सैड और दाँत लंबे हैं। अपने भारी भरकम सिर को मटकाता हुआ हाथी बढ़ता जा रहा है।

शब्दार्थ: देह-शरीर। थुलथुल-मोटाई के कारण ढीला या हिलता हुआ शरीर। पीलवान-महावत। पगड़-पगड़ी।

प्रसंग: पूर्ववत।